M.A. IInd Sem विषय संहिता शाकुनाध्याय और शाकुनोत्तराध्याय

By Deepti Tyagi

प्रश्न : वृहत संहिता के अनुसार दिशाओं का संज्ञा और उनके फल के नियम बतलाइए ?

- उत्तर : सूर्योदय से सूर्यास्त तक के 4 पहर और इसी तरह रात के 4 पहर होते हैं | इसके अलावा ईशानादि आठ दिशाएँ होती है |जिसमे बारी-बारी से सूर्य जाता है | जिनको 3 भागो में विभाजित किया जाता है |
- सूर्य मुक्त अवस्था : यह वह दिशा है जिस दिशा से सूर्य अभी निकल कर आया है | इसको अंगारिणी दिशा कहते है |
- सूर्य युक्त अवस्था : यह वह दिशा है जिस दिशा से सूर्य स्थित है | इसको दीप्ता दिशा कहते है |
- एष्यत्सूर्या अवस्था : यह वह दिशा है जिस दिशा से सूर्य अभी निकल कर आया है | इसको धुमिनी दिशा कहते है |
- इन दिशाओं की अतिरिक्त 5 दिशाएं शान्ता दिशाएं कहलाती है |

	प्रहर	अंगारिणी दिशा	दीप्ता दिशा	धुमिनी दिशा	शान्ता दिशा	शान्ता दिशा	शान्ता दिशा	शान्ता दिशा	शान्ता दिशा
1	प्रथम प्रहर	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर
2	द्वितीय प्रहर	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
3	तृतीय प्रहर	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पूर्व
4	चतुर्थ प्रहर	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पूर्व	आग्नेय
5	पंचम प्रहर	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण
6	षष्ठ प्रहर	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य
7	सप्तम प्रहर	वायव्य	उत्तर	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम
8	अष्टम प्रहर	उत्तर	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य

दिशा के अनुसार फल का नियम : अंगारिणी, दीप्ता व धुमिनी दिशाओं से पांचवी-पांचवी दिशा में होने वाले शकुनों का फल क्रमशः भूत, वर्तमान व भविष्य में होता है | अर्थात अंगारिणी दिशा से पांचवी दिशा शान्ता दिशा में होने वाले शकुन का फल भूतकाल में बीत चुका है |दीप्ता से पंचम दिशा के शकुन का फल वर्तमान काल में हो रहा है या तुरन्त होने वाला है | धुमिनी दिशा से पंचम दिशा में होने वाले शकुन का फल भविष्यकाल में होने वाले है | शान्ता दिशाओं के शुभ शकुनों का फल अधिक शुभ तथा अशुभ शकुनों का फल अधिक होता हैं | अंगारिणी, दीप्ता व धुमिनी दिशाओं में उत्पन्न शुभ शकुनों का फल मामूली अशुभ शकुनों का फल अधिक होता हैं ।

कोई भी शुभाशुभ शकुन यदि पास में अर्थात आकाश में बहुत नीचे हो तो फल शीघ्र देने वाला होता है | इसके विपरीत दूरस्थ या उच्चस्थ शकुन का फल विलम्ब से देने वाला होता है |

जले, टेढ़े-मेढ़े, आतुर, टूटे, सूखे, कांटेदार पेड़, पत्थर, नीचा स्थान कपाल, हड्डी, बाल, राख, श्मशान, अंगार, बांबी, ऊसर भूमि, सूखे तालाब, जीर्ण शीर्ण स्थान, अपवित्र स्थान के शकुन तीव्र फल वाले होता हैं | इसके विपरीत मनोहर, स्निग्ध, फलदार, दुधदार, फूलवाले पेड़, समान समतल व शुभ स्थान के शकुन शांत अर्थात शुभ होते है |

प्रश्न : ऋतु के आधार पर शकुनों निष्फलता के फल बतलाइए?

क्रमांक	ऋतु	शकुन
1	शिशिर	मृग, घोड़ा, बकरा,गधा, हिरण, ऊँट, खरगोश
2	बसन्त	काक, कोयल
3	वर्षा ऋतु	सूअर, कुत्ता, भेड़िया
4	शरद	जलचर पक्षी, पानी में उत्पन्न चीजे, खाने वाले जीव,गाय, क्रोंचपक्षी
5	हेमंत	वाघ, रीछ, बन्दर, चीता, भैसा, बिल में रहने वाले जीव,
6	सावन	हाथी, चातक

उपरोक्त ऋतु में दिखने वाले शकुनों का फल निष्फल होता है |

प्रश्न : 8 दिशाओं के 32 उपविभाग कर के उन स्थानों में होने वाले शकुनों का फल बतलाइए ?

उत्तर : 4 दिशाओं और 4 विदिशा अर्थात कोण के बीच तीन बराबर भागकर लेते है उन के जिस भाग पर शकुन हो तब उसी दिन या उसके अगले समय या भविष्य में उनसे सम्बंधित चीजों से समागम होता है |

क्र	दिशा और कोण	भाग 1	भाग 2	भाग 3
1	पूर्व से अग्नि कोण बीच	कोषाध्यक्ष	अग्नि कार्य करने वाले	तपस्वी व्यक्ति
2	अग्निकोण से दक्षिण के बीच	कारीगर या कलाकार	सन्यासी या भिक्षु	नग्न
3	दक्षिण से नैऋत्य कोण	हाथी या हाथी से सम्बंधित व्यक्ति	गोपाल,ग्वाला या दूध का कार्य करने वाला	धार्मिक क्रियाओं से सम्बंधित व्यक्ति
4	नैऋत्य से पश्चिम के बीच	मतवाली सुन्दर स्त्री,	प्रसूति	चोर
5	पश्चिम से वायव्य के बीच	शराबी	पक्षी या शिकारी	क्रूर व्यक्ति
6	वायव्य कोण से उत्तर के बीच	विष घातक	गोपाल	जादूगर
7	उत्तर से ईशान कोण के बीच	धनी	दैवग	फूलों का व्यवसायी, माली
8	ईशान कोण से पूर्व के बीच	वैष्णव व्यक्ति	जासूस या चुगलखोर	घोड़ो से सम्बंधित व्यक्ति

प्रश्न : यात्रा के दौरान दिखने वाले शुभ शकुन बतलाइए ?

उत्तर : यात्रा के दौरान दिखने वाले शकुन निम्नलिखित हैं

•गीदड़, श्यामा चिड़िया, छछूंदर, गौरैया, पिंगला, उल्लू जैसी चिड़िया, छिपकली, सूअर, कोयल, पुरुष संज्ञक नाम वाले पक्षी यदि यात्रा में बाएं दिखे तो शुभ होता है |

•स्त्री संज्ञक नाम वाले पक्षी या पशु,गिद्ध, वानर, भषक, श्री कर्ण पक्षी, मृग, बाज यदि यात्रा में दायीं ओर हो तो शुभ फल देते है |

•मुँह से खखारना, हथेली से ताली बजाना, पुण्य वचन, शंख, जल,वेड पाठ, तुरही या नगाड़े की आवाज बायीं ओर से आये तो शुभ होता है |

प्रश्न : दिशानुसार शकुन का फल बतलाइए ?

क्र	दिशा	शुभ शकुन	अशुभ शकुन
1	पूर्व	घोड़ा, सफेद वस्तु	जाल, पशु-पक्षी का शिकारी, बहेलिया,
2	दक्षिण	शव, मांस	हथियार, मारने, बांधने का कोई उपकरण,
3	पश्चिम	कन्या, दही	शराब, नपुंसक,
4	उत्तर	गाय, ब्राहमण, साधु सज्जन पुरुष	दुष्ट व्यक्ति,आसन, कुर्सी, सोफा,पलंग

प्रश्न : कुछ प्रमुख शकुन के फल बतलाइए ?

उत्तर : **1 कलह कारक शकुन :** गाँव में रहने वाला शकुन यदि तीव्र स्वर से दीप्त हो या कांटेदार पेड़ पर स्थित हो या मेष या वृश्चिक लग्न हो और यदि यही शकुन नैऋत्य दिशा में स्थित हो तथा यह सभी शकुन सामने या दाएँ-बाएँ हो तो शकुन कलह या विवाद की सुचना देता है |

2 मिलन सूचक शकुन : (अ) कर्क लग्न में शुक्र का नवांश हो तब उस समय उस लग्न में विदिशा में स्थित हो तथा नीचे की ओर मुँह करके आवाज करता शकुन हो रहा हो और वह शकुन स्थान दीप्त या शब्द दीप्त हो तो वह किसी वस्तु या स्त्री से संयोग करता हो तो दूत से मिलन होता है|

(आ) पुरुष संज्ञक लग्न हो और उस दिन विषम तिथि (1, 3, 5, 7, 9 आदि) हो, शकुन पुरुष श्रेणी का हो, मुख्य दिशा में स्थित हो, दीप्त शकुन हो तो पुरुष से मिलन भेट आदि होती है | यदि इन चीजों में सम विषम मिश्रण हो अर्थात सारे तत्त्वों का मिश्रण हो तो नपुंसक के साथ मिलन होता है |

(इ) सिंह लग्न हो या किसी भी लग्न में सिंह नवांश हो या लग्न में सूर्य स्थित हो और उस समय दीप्त शकुन स्वर करे तो किसी बड़े पुरुष का या बड़े व्यक्ति से सम्बन्धित व्यक्ति का आगमन होता है |

3 वर्षा सूचक शकुन : कर्क, मकर, मीन जलीय लग्न हो पूर्वाषाढ व शतभिषा जल नक्षत्र, जल या वारुण संज्ञक मुहूर्त्त हो, पक्ष में अंत अर्थात अमावस्या या पूर्णिमा को हो दीप्त शकुन हो तो यह वर्षा कारक होते है |

यदि जलचर प्राणी द्वारा किया गया शान्त शकुन हो और लग्न भी जलचर हो भी वर्षाकारक होता है |

- अग्नि कांड सूचक शकुन : (अ) अग्नि कोण हो आग्नेय लग्न हो, अग्नि संज्ञक मुहूर्त्त हो, कृतिका नक्षत्र हो तो अग्नि का भय रहता है |

(आ) विष्टि करण भद्रा, शनि का लग्न हो अर्थात मकर, कुम्भ, कांटेदार पेड़ तो भी अग्नि कांड सूचक होते है

प्रश्न : रविवार आदि वारों में किये जाने वाले कार्य बतलाइए ?

उत्तर : रविवार आदि को किये जाने वाले कार्य निम्न है
•सूर्य जन्म राशि से उपचय (3,6,10,11) भावों में गोचर करे तो रविवार के दिन सोना, तांबा, घोडा, लकड़ी का काम, हड्डी से सम्बंधित कार्य, चमड़े का कार्य, ऊन का कार्य, पर्वत कार्य, वृक्ष कार्य, सीपी, सर्प, चोर,शस्त्र, जंगल, क्रूर कर्म, राजदर्शन, अभिषेक, दवा, प्रसाधन सामग्री, बिक्री का समान, ग्वाला, रेगिस्तान प्रदेश, पत्थर, कुत्कारी, कुलीन व्यक्ति, परसिद्ध व्यक्ति, शुर, संग्राम में प्रशंसा प्राप्त, यात्री, अग्नि पर आधारित कार्य, इन सबसे सम्बद्ध कार्यो को रविवार को या रविवार में लग्नगत सूर्य की स्थिति में करे |

•सोमवार को किये जाने वाले कार्य :

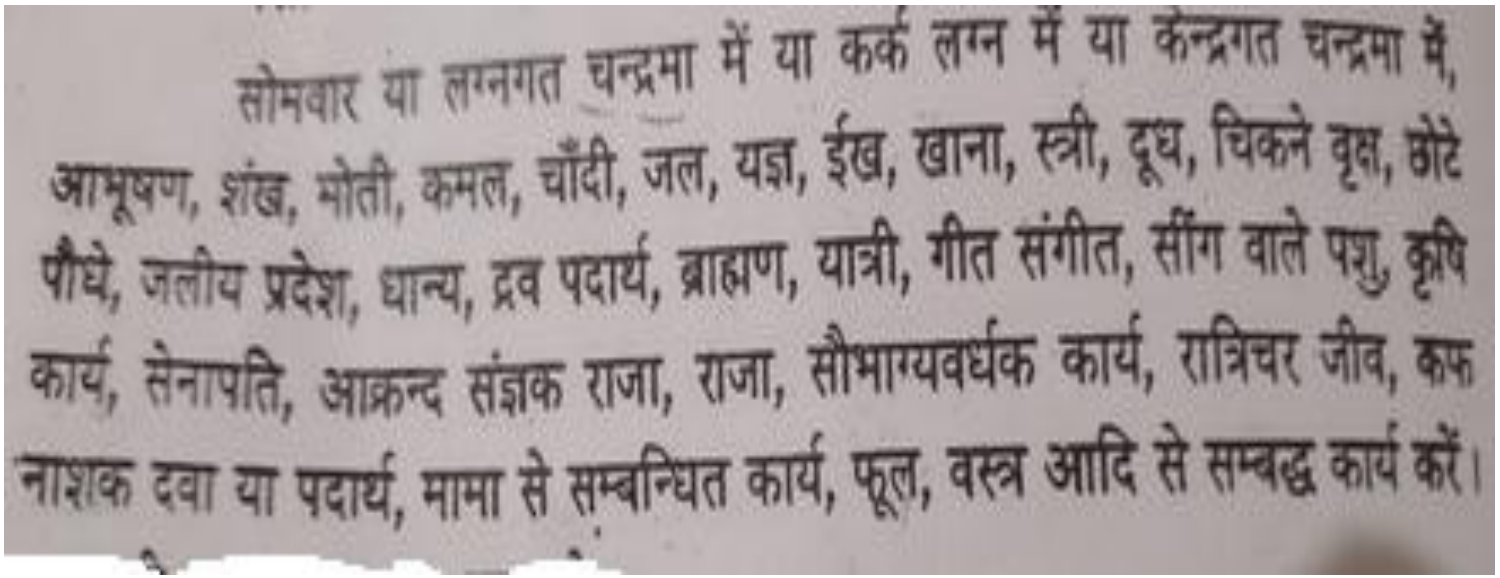

सोमवार या लग्नगत चन्द्रमा में या कर्क लग्न में या केन्द्रगत चन्द्रमा में, आभूषण, शंख, मोती, कमल, चाँदी, जल, यज्ञ, ईख, खाना, स्त्री, दूध, चिकने वृक्ष, छोटे पौधे, जलीय प्रदेश, धान्य, द्रव पदार्थ, ब्राह्मण, यात्री, गीत संगीत, सींग वाले पशु, कृषि कार्य, सेनापति, आक्रन्द संज्ञक राजा, राजा, सौभाग्यवर्धक कार्य, रात्रिचर जीव, कफ नाशक दवा या पदार्थ, मामा से सम्बन्धित कार्य, फूल, वस्त्र आदि से सम्बद्ध कार्य करें।

•मंगलवार को किये जाने वाले कार्य :

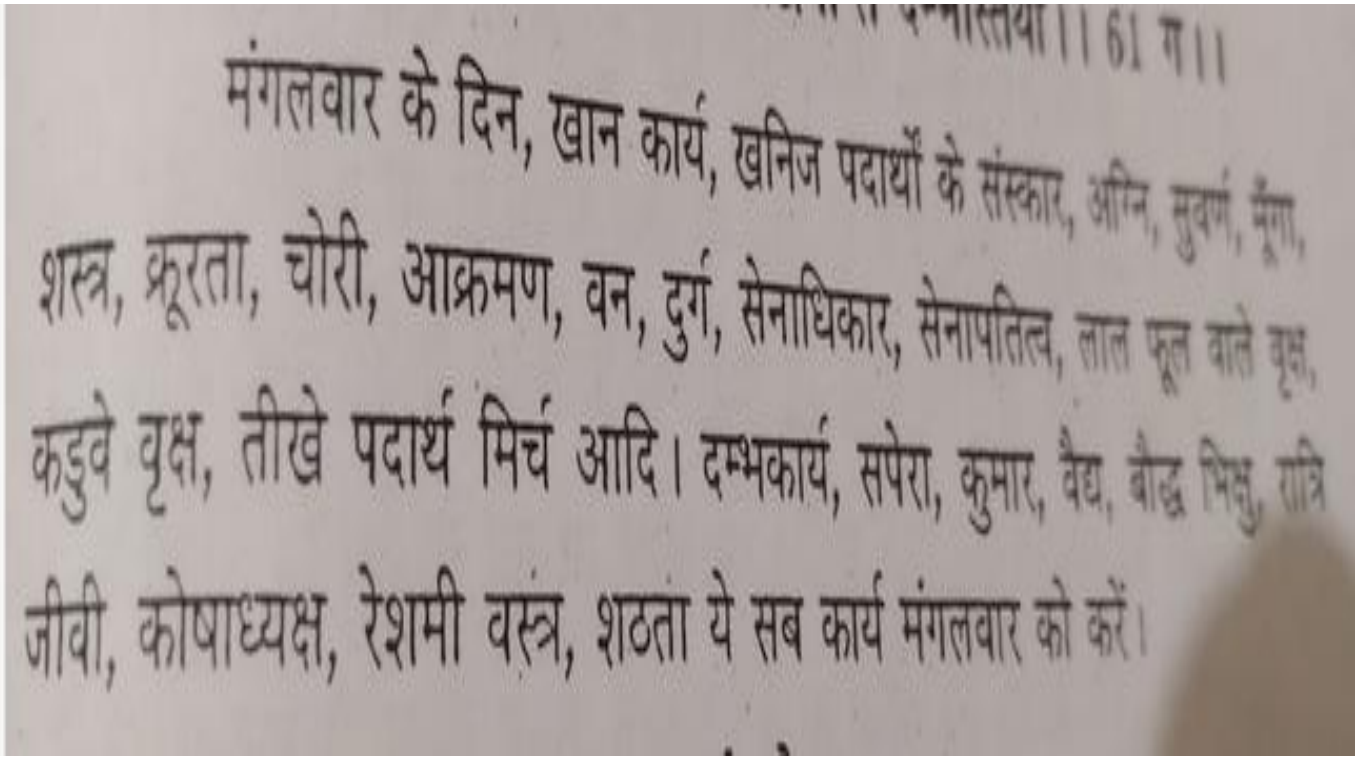

...स्तथा।। 61 ग।।

मंगलवार के दिन, खान कार्य, खनिज पदार्थों के संस्कार, अग्नि, सुवर्ण, मूँगा, शस्त्र, क्रूरता, चोरी, आक्रमण, वन, दुर्ग, सेनाधिकार, सेनापतित्व, लाल फूल वाले वृक्ष, कड़ुवे वृक्ष, तीखे पदार्थ मिर्च आदि। दम्भकार्य, सपेरा, कुमार, वैद्य, बौद्ध भिक्षु, रात्रि जीवी, कोषाध्यक्ष, रेशमी वस्त्र, शठता ये सब कार्य मंगलवार को करें।

बुधवार को किये जाने वाले कार्य :

हरे रत्न, हरे पदार्थ, सुगन्धित पदार्थ, वस्त्र, उग्र व सौम्य मिश्रित कार्य, नाट्य कर्म, शास्त्र, विज्ञान, काव्य, सभी कलाएँ, पदार्थों का परस्पर मिश्रण, मन्त्र प्रयोग, आयुवर्धक क्रियाएँ, स्नान कार्य, शीघ्र निबटने योग्य कार्य, दीर्घकाल सापेक्ष कार्य, परभाव-बोध निपुणता, वर्षा के दौरान यात्रा करते समय रखे जाने वाले कदमों की तरह, दीर्घ मध्यलघुकाल में निबटने योग्य कार्य, बुधवार या बुध के लग्न में करें। लेकिन बुध पाप युक्त नहीं होना चाहिए।

गुरुवार को किये जाने वाले कार्य :

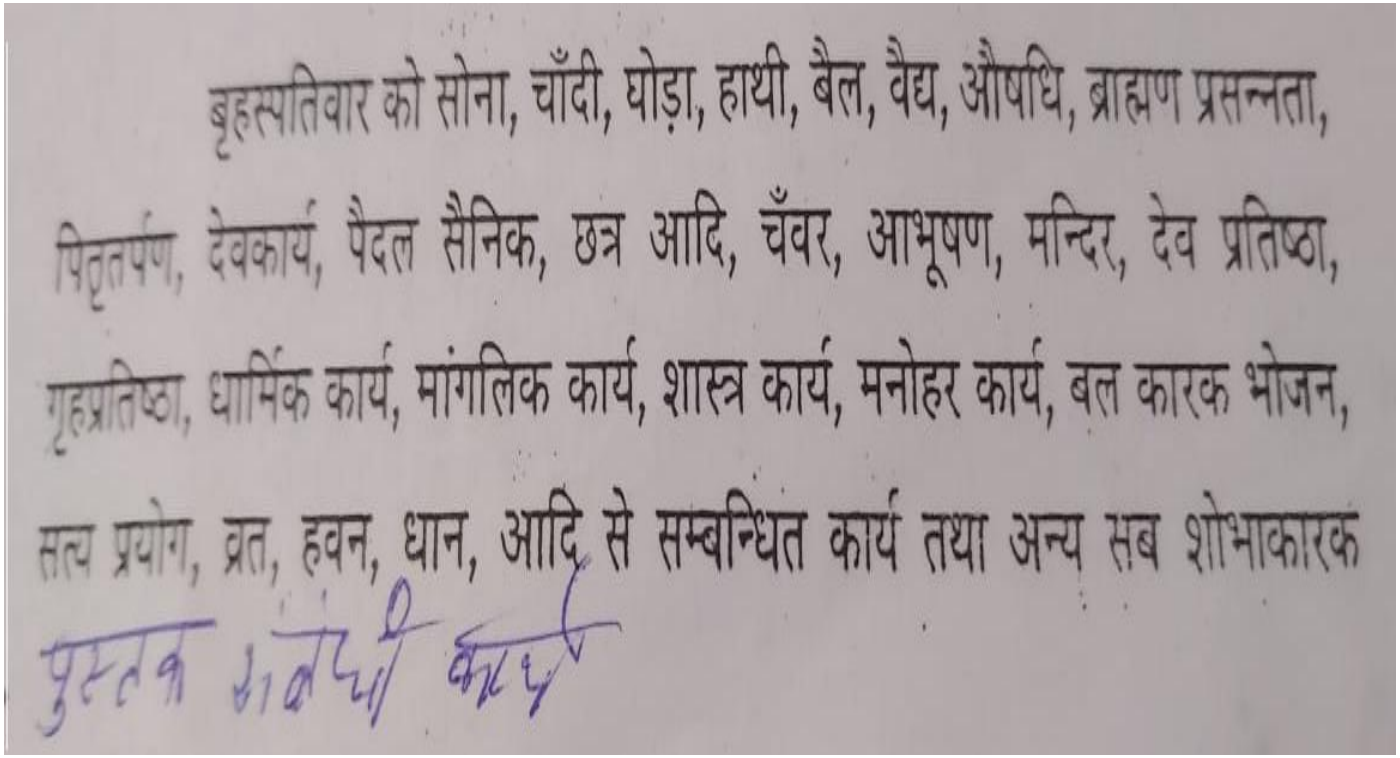

बृहस्पतिवार को सोना, चाँदी, घोड़ा, हाथी, बैल, वैद्य, औषधि, ब्राह्मण प्रसन्नता, पितृतर्पण, देवकार्य, पैदल सैनिक, छत्र आदि, चँवर, आभूषण, मन्दिर, देव प्रतिष्ठा, गृहप्रतिष्ठा, धार्मिक कार्य, मांगलिक कार्य, शास्त्र कार्य, मनोहर कार्य, बल कारक भोजन, सत्य प्रयोग, व्रत, हवन, धान, आदि से सम्बन्धित कार्य तथा अन्य सब शोभाकारक

शुक्रवार को किये जाने वाले कार्य :

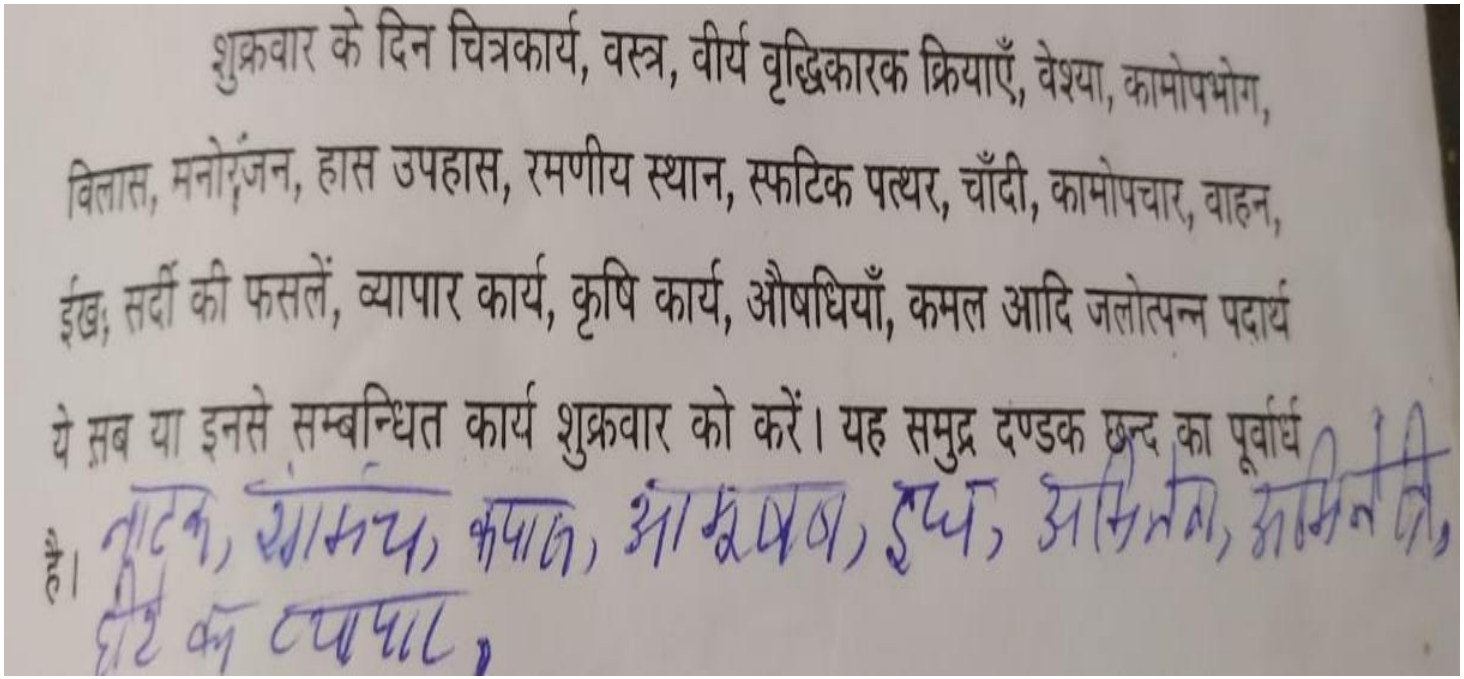

शुक्रवार के दिन चित्रकार्य, वस्त्र, वीर्य वृद्धिकारक क्रियाएँ, वेश्या, कामोपभोग, विलास, मनोरंजन, हास उपहास, रमणीय स्थान, स्फटिक पत्थर, चाँदी, कामोपचार, वाहन, ईख; सर्दी की फसलें, व्यापार कार्य, कृषि कार्य, औषधियाँ, कमल आदि जलोत्पन्न पदार्थ ये सब या इनसे सम्बन्धित कार्य शुक्रवार को करें। यह समुद्र दण्डक छन्द का पूर्वार्ध है।

शनिवार को किये जाने वाले कार्य :

शनिवार के दिन भैंस, बकरा, ऊँट, काली चीजें, लोहा, दास, नौकर सम्बन्धी कार्य, वृद्धावस्था, नीच पुरुष, पक्षी, चोर, जाल कार्य करने वाले, शिकारी या जालसाज, नीच, टूटा बर्तन, हाथी, विघ्न कारक क्रियाएँ करें। इनको छोड़कर अन्य कार्य न करें। वे कार्य सफल नहीं होते हैं। जिस प्रकार सागर के बीच में भी व्यक्ति खारा पानी होने से प्यासा रहता है, वैसे ही काम असफल होते हैं। यह समुद्र दण्डक छन्द पूरा हुआ।